रिकर्डिः -:-इस पाप की दुनियां... ओम शान्तिः प्रातः क्लास 22-7-67

मीठे-2 रूहानी बच्चे जानते है कि यीं पाप की दुलियां है। पुण्य की दुनियां को भी मनुष्य जानते है। मुक्ति और जीवनमुक्ति पुण्य की दुनियां को ही कहा जाता है।वहां पाप होता नही है। पाप होते ही है दुःख धाम। रावण राज्य में। दुख देने वाले रावण को भी देखा है। रावण कोई चीज नती है फिर भी ऐपे-जी जलाते है। बच्चे जानते है कि हम इस समय रावण राज्यमे है परन्तु किनारा किया हुआ है। हम अभी पुरूषोतम संगम युग पर है। बच्चे जब यहां पर आते है तो बुधी मे यह रहता है कि हम उस बाप के पास जाते है जो कि हमको मनुष्य से देवता बनाते है। सुखधाम का मालिक बनाते है। सुखधाम का मालिक बनाने वाला कोई ब्रहमा नही है। कोई भी देहधारी नही है। वो तो है ही शिव बाबा। वो विदेही है। देह तुमको भी नही थी। परन्तु फिर तुम देह लेकर जन्म मरण मे आते हो। तो तुम समझते हो कि हम बेहद के बाप पास जाते है। वो ही हमको श्रेष्ट मत देते है। तुम ऐसे पुरूषार्थ करने से स्वर्ग का मालिक बन सकेंगें। स्वर्ग को तो सभी याद करते है समझते है कि नई दुनियां जरूर है। वो भी जरूर कोई स्थापन करने वाला है। नरक भी कोई स्थापन करते है। तुम्हारा सुखधाम का पार्ट कब पुरा होता है वो भी जानते हो। फिर रावण राज्य मे तुम दुःखी होने लगते हो। इस समय यह है दुःखधाम। भल कितने भी करोड पति पदमपति हो परन्तु पतित दुनियां तो जरूर कहेंगें नां। कंगाल दुनियां दुःखी दुनियां है। भल कितने भी बडे-2 मकान है। सब के भी सभी सामान है। तो भी कहेंगें कि यह पतित पुरानी दुनियां है। विष्य वैतरणी नदी मे गोता खाते रहते है। यह भी नही समझते है कि विकारमे जाना पाप है। कहते है कि इस बिना तो दुनियां ही वृधी को कैसे पावेंगी। बुलाते भी है हे भगवान हे पतित पावन आकर इस पतित दुनियां को पावन बनाओ। आत्मा कहती है शरीर दवारा। आत्मा ही पतित बनी है। तभी तो पुकारती है। कहां भी जाता है पतितात्मा। वहां पर है पावन आत्मा। स्वर्ग मे पावन आत्मायें थी वो फिर कौन थी जो कि पतित बनी है यह और कोई समझ नही सकते है। तुम बच्चो ने ही समझा है। 84 जन्मो का हिसाब किसी की भी बुधी मे नही है। तुम जानते हो कि कौन-2 84जन्म लेते है। भेजा भगवानोवाच्य है बच्चोः- तुम अपने जन्मों को नही जानते हो। मै तुमको वृतान्त सुनाता हूं। कि तुम कैसे 84जन्म लेते हो। कृष्ण की आत्मा ही 84जन्म लेते-2 अब अन्तिम जन्म मे है। ऐसे तो नही कि सभी रथो मे बैठेंगें।नही। उनका एक रथ मुकर्र है। उन्होने तो फिर बैल भी दिखवाया है। गाडी भी दिखाई है। गऊपाल आद नाम सुन कर बैल कह दिया है तुम हो तो मनुष्य। तुमको ही ज्ञान घास खिलाते है। ज्ञान जानवरो को तो नही सुनावेंगें नां।यह अबलाये माताये है जिनको कि बाप ज्ञान पढाते है योग सिखाते है। तुम जानते हो कि कि बाबा इस तन मे आया हुआ है हमको ले जावेंगें। उनका यह रथ है। जिस रथ मे आते है वो भी मनुष्य है। जरूर उनकी भी आत्मा तो होगी नां। तुम बच्चे जानते हो इस आत्मा ने 84जन्म का चक्र लगाया है। इस आत्मा का पहले-2 कौनसा जन्म था सो अभी तुम जानते हो। फिर अपने पर भी आओं। अपने परनवो ते आते है जो कि पुरूषार्थ करते है।जो अच्छे पुरूषार्थी है वो ही अपने को समझें कि हमने ही पुरे 84जन्म लिये है। फिर इन (ल ' न)की साथ ही हम राज्य करेंगें। एक ने तो 84जन्म नही लिये है। राजा के साथ प्रजा भी चाहिये नां। तुम ब्राहमणों में भी सभी नम्बरवार है। कोई राजारानी बनते है तो कोई प्रजा। तुम कहते हो कि हमने भी बाबा केसाथ ही 84जन्म भोगें है। अभी हम नर से नारायण बनने आये है। बाप कहते है कि बच्चो दैवी गुण भी धारन करने है। क्रमनल;शैतान आखे है। कोई को देखने सेही विकार की दृष्टी हो जाती है तो उनके 84जन्म नही होगें। वो नर से नारायण नही बन सकेंगें? जिनकी आखो पर जीत नहीं नही पहनी जाती है। उनको समय लगेगा। जब जीत लो तब कर्मातीत अवस्था हो। सारा आखो पर ही मदार है। आखें ही धोखा देतीहै। आत्मा इन खिडकियों से देखती है। इसमे तो डबल आत्मा है। बाप भी ... खिडकियों से देख रहे है। फिर = हमारी दृष्टी आत्मा पर जाती है। बाप आत्मा को ही समझाते

कहते है कि मैने भी शरीर लिया है तभी तुमको समझाता हूं। तुम बच्चे जानते हो कि बाप हमको सुख की दुनियां मे ले जाते है। यह है वेशाल्य।रावण राज्य। तुमने इस वेशाल्य से अब किनारा कर लिया है। कोई बहुत आगे बढ गये कोई पिछाडी हट गये। हर एक कहते भी है कि पार लगाओं। अब तो जावेंगे ही सतयुग में। परन्तु वहां पर उंच पद पाना है तो उसके लिय मेहनत करनी है। पवित्र बनना है। मुख्य बात है बाप को याद करो तो विकर्म विनाश हो। यह है पहली-2 सबजेक्ट। तुम अब जानते हो कि हम आत्मा ऐक्टर है। पहले-2 हम सुखधाम आये हम अब दुःखधाम मे आये है।अब बाप फिर सुखधाम मे ले जाने आये है। कहते है कि मुझे याद करो और पवित्र बनो। कोई को भी दुःख नां दो। बाबा सुनते रहते है एक दो को बहुत दुःख देते रहते है। कोई मे काम का कोई मे क्रोध आया हाथ लगाया चमाट मारी। बाप कहेंगें कि यह तो दुख देनी वाली पापात्मा है। पुण्यात्मा कैसे बनेगी। अब तब पाप करते रहते है। यह तो नाम बदनाम करते है। सभी क्या कहेंगें? कहते है हमको भगवान पढाते है। हम तो मनुष्य से देवता विश्व का मालिक बनते है। वो फिर ऐसे काम करते है क्या। इसलिय बाबा कहते है रोज रात को अपने को देखो। अगर सपूत बच्चे होगें तो चार्ट भेजेंगें।भल कोई-2चार्ट भेजते भी है परन्तु साथ मे यह तो लिखते ही नही है कि हमने किसीको दुःख दिया वां यह भूल की। याद करते रहे और काम उल्टा करते रहे यह तो ठीक नही है। उल्टे कर्म करते-2 देहअभिमानी बन जाते है। फिर चाहे तो टीचर है वां स्टुडन्ट है। यहां पर तो स्टुडण्ट भी टीचर बनते है। स्टुडण्टस को टीचर पढाते है फिर जबकि वो भी टीचर बन जावे। जब समझाने लग जाते है कि यह चक्र कैसे फिरता-यह तो बहुत सहज है। एक ही दिन मे टीचर बन सकते है। सैन्टरस पर आते ही है टीचर बनने लिये। सात रोज मे पढाने वाले टीचर से भी उंच टीचर बन सकते है। तुमको 84का राज समझाते है। टीच करते है फिर जाकर उस पर मन्थन करना होता है। हमने 84जन्म कैसे लिये? उस टीचर से भी अच्छा बन जाते है। जो टीचर से टीचर बनते है वो उस सिखाने वाले से भी दैवी गुण जास्ती धारन कर लेते है। बाबा सिध करके बता सकते है। दिखावेंगे बाबा हमारा चार्ट देखो। हमने मन्सा भीकिसीको दुःख नही दिया है। बाबा कहेंगें जिसने तुमको टीच किया उनमे तो अवगुण है यह तो बच्चा बहुत मीठा है। अच्छी खुशबु निकाल रहे है। टीचर बनना तो सैकिण्ड का काम है। टीचर से भी स्टुडण्टस याद की यात्रा मे तीखे निकल जाते है। तो टीचर से भी ऊंच पद पावेंगें। बाबा तो पूछते है नां कि किसीको टीच करते हो?रोज शिव के मन्दिर मे जाकर टीच करो। शिव बाबा कैसे आकर स्वर्ग की स्थापना करते है स्वर्ग का मालिक बनाते है। समझाना तो बहुत ही सहज है। बाबा को चार्ट भेज देते है कि बाबा हमारी ऐसी अवस्था ऐसी है। चार्टरखने से हमको बहुत खुशी होती है।परन्तु यह तो देखो कि किसीको दुःख तो नही देते हो। कोई विकर्म तो नही करते हो। क्रमनलओय कोई उल्टा-सुल्टा तो काम नही करते है। अपने मैनर्स कैरेक्टर्स देखने है। सारा मदार आंखो पर है। आंखे अनेक प्रकार का धोखा देती है। जरा भी चीज उठा कर खाया तो वो भी पाप बन जाता है।क्योंकि सिम=छु बिना छुटी के उठाया नां। यहां पर बहुत कायदे है। शिव बाबा का यज्ञ है नां। चलाने वाले के बिना पूछे चीज खा नही सकते हो।एक खावेंगें तो दुसरे भी वैसे ही करने लग जावेंगें। वास्तव मे यहां पर कोई भी वस्तु ताले के अन्दर रखने की दरकार नही है। नौकरी की तो बात ही और है। वास्तव मे तो यहां पर कोई बाहर का नौकर भी नही होना चाहिय सिवाय मेहत्तर के।ला कहता है इस घर के अन्दर किचन के सामने कोई भी अपवित्र आना नही चाहिये। बाहर मे तो पवित्र नां पवित्र का खयाल नही होता हैपरन्तु पतित तो अपने को कहते है नां। सब पतित है। कोई वल्लभाचार्य को वां शंकराचार्य को हाथ लगा नही सकते है। क्योंकि वो समझते है कि हम पावन यह पतित है। तो यहां पर भल पतित है तो फिर भी पवित्र व अनसार विकारो का सन्यास करते है। तो निरविकारी के आगे विकारी मनुष्य माथा टेकते है।

वहूलीस्या को रही हुई रगतें:-:-तुम बच्चों को सबको मैसेज देना है कि परमपिता परमात्मा निराकार यह-यह कहते है। वो ही उंच ते उंच है। देहधारी भगवान कैसे हो सकता है। यह तो इम्पासीबुल है। ब्र, वि, शंकर को भी भगवान नही कह सकते है। भगवान एक ही है। वो ही सर्व का सदगति दाता है। बाकी सब भक्ति मार्ग के शास्त्र है। ज्ञान का सागर पतित पावन एक ही बाप है। फिर पानी की नदी को क्यों कहते है पतितपावनी। पानी ही से अगर सदगति हो जावे फिर गुरुओं पास क्यों जाते है। कितने ढेरो जाते है। दरकार ही नही रहती है। जबकि गंगा पतित पावनी है फिर तो मन्त्र जन्त्र आद लेने की दरकार ही नही है। कितनी तो अन्धाधान्धी है। तुम उनको दाढी से पकड सकते हो। बच्चोंको खडा होना चाहिये। तीर्थ यात्राओं पर गुरु लोग बहुत होते है। वहां पर सैन्टर्स खोलते तो है परनतु इतने उठते नही है। गुरु लोग तो बडा ही गर्क कर देते है। सभी मनुष्य उनसे डर जाते है कहीं पर कोई श्राप नही दे देवे। बाप तो दुकानदारी को भी बहुत अच्छी रीती राय देते है। है बिलकुल सहज। फिर भी थोडेक चित्र चाहिये। उसमें से भी सीढी तो बहुत ही अच्छी है। वो भी बाम्बे में छपवा रहे है। जन्माष्टमी पर मिल जावेगी। गीता का भगवान कृष्ण नही है शिव है वो भी समझाने से सिध हो जावेगा। अपनी भी और औरो की भी तरक्की करेंगे। दुनियां में दिन प्रति दिन बहुत खराबियां होती जातीहै। इसलिये अब बाप को याद करते हुये सर्विस में लग जाओ। बहुत सहज ही है। ओम

2:-:-पहले-2 तो शिव बाबा की ही भक्ति होती है। वो तो बडा बनावेंगे नां। पहले शिव बाबा की अव्यभचारी भक्ति चलतीहै। फिर देवताओं की मूर्तियां बनाते है। उनके फिर बडे-2 चित्र बनाते है। उसमे तुम पाण्डवो के भी बडे-2 चित्र बना देते है। स्वदर्शन चक्र भी तुम्हारा है। उन्होने तो फिर विष्णु को दे दिया है। वि, का भी बडा -2 चित्र बनाते है। दीपमाला पर पुजा भी लक्ष्मी की करते है। अर्थ नही समझते है। चार भुजाओं वाला कोई मनुष्य होता है क्या। अभी तुम बच्चो ने अर्थ समझा है नां कितना फर्क है। लक्ष्मी की पुजा 12 मास में एक बार करते है। सरस्वती की रोज-2 करते है। यह भी बाबा ने समझाया है कि तुम्हारी डबल पुजा होती है। मेरी तो सिर्फ आत्मा माना लिंग की ही पुजा होती है। तुम्हारी तो सालीग्रामो के रूप से फिर देवताओं के रूप में भी पुजा होती है। रुद्रयज्ञ रचते है तो कितने सालीग्राम बनाते है। तो कौन बडा हुआ? तभी बाबा बच्चो को नमस्ते करते है। कितना उंच पद प्राप्त करवाते है। शास्त्रो में यह बाते थोडेई है। वो भक्ति मार्ग की कथायें तो जन्मजन्मान्तर ही तुम सुनते आये हो। बाबा कितनी रहस्य वाली बातें सुनाते रहते है। तुम बच्चों को कितनी खुशी होनी चाहिये। हमको भगवान पढाते है भगवान भगवती बनाने लिये तो कितना शुक्रिया मानना चाहिये। बाप की याद में सोने से सपने भी अच्छे आवेंगें। सा० भी हो सकता है। ओम

3:-:- कम पुरुषार्थ करने वाले स्वर्ग में तो आवेंगें। परन्तु कम पद पावेंगें। क्योंकि राजधानी स्थापन हो रही है नां। कोई तो हार अगर खा लेते है तो अपने को फांसी दे लेते है। जन्मजन्मान्तर का पद भ्रष्ट हो जाता है। कहेंगें कि बाप से तुम यही पद पाने आते हो। बाप इतना उंचा राजा बने हमककोई प्रजा थोडेई बनेंगें। बाप तो गदी पर बैठा हो और बच्चे दास-दासियां बने कितनी लज्जा की बात है। पिछाडी में तुमको सभी सा० होगा। फिर बहुत पछतावेंगे कि नाहक ही हमने ऐसा किया। सन्यासी भी ब्रह्मचर्य में रहते है तो विकारी सभी उनको माथा टेकते है। पवित्रता का मान तो है नां। किसीकी तकदीर में नही है तो बाप आकर पढाते भी है तो भी गफलत करते रहते है। याद ही नही करते है तो बहुत विकर्म कर लेते है। तुम बच्चो पर अब यह बृहस्पत की डसा है। इसेस उंच डसा और कोई की होतीनही है। इसीये तुम बच्चो पर चक्र लगता ही रहता है। मीठे-2 रूहानी सपूत, आज्ञाकारी, दुसरो तक मैसेज पहुचाते रहते हुये बच्चो ही प्रित मात-पिता बाप दादा का रूहानी याद प्यार और गुडमानिंग